"चिरांद"

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

छपरा से 10 किलोमीटर पूर्व हाजीपुर छपरा-सड़क के दक्षिण गंगा के किनारे चिरांद का पुरातात्विक स्थल स्थित है| इस स्थल के निकट सरयू (घागरा) एवं सोन नदियां गंगा में मिलती है| एक अन्य शुष्क नदी गंडकी भी इस स्थल से कुछ दूरी पर स्थित है| इस प्रकार यह पुरास्थल नदियों के संगम पर बसा था|

इस पूरा स्थल की खुदाई 1963 ईस्वी में प्रारंभ हुई| उत्खनन के फलस्वरुप नवाश्म काल से लेकर पाल काल तक की लगातार संस्कृतियों के चिन्ह प्रकाश में आए| वुर्जहोम कश्मीर से पूर्व एवं आसाम के पश्चिम स्थित विशाल भू-भाग में नवाश्म संस्कृति का यह प्रथम उदाहरण था| इस खोज से उत्साहित होकर बाद में गंगा घाटी में और भी नवाश्म सांस्कृतिक स्थल खोजे गए| परंतु चिरांद गंगा घाटी में प्राप्त नवाश्म

संस्कृति का प्रथम स्थल होने के कारण पुरातात्विक दुनिया में इसका बड़ा नाम है|

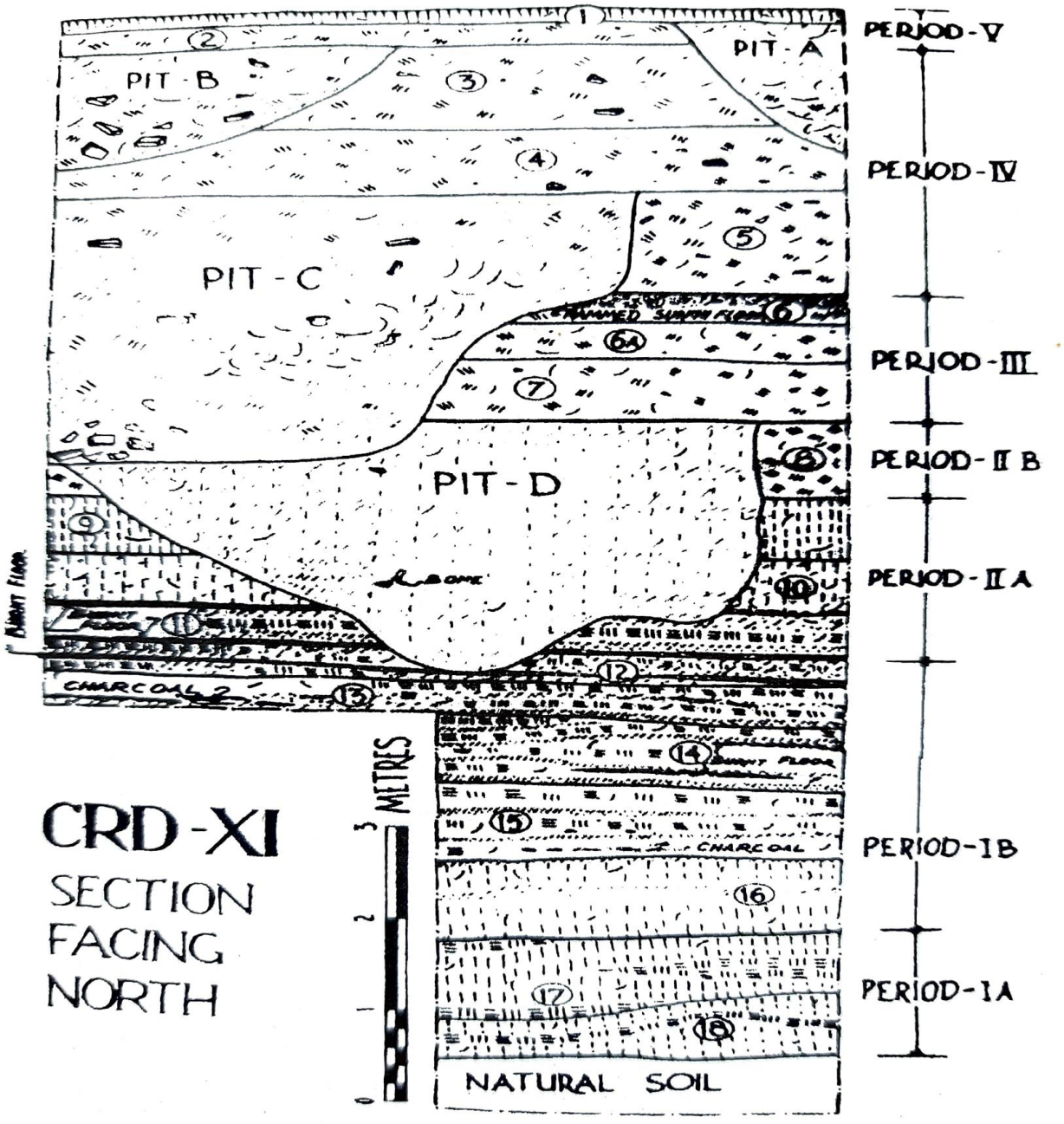

चिरान्द सेक्शन

उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से स्पष्ट होता है कि यद्यपि हल का प्रयोग नहीं होता था किंतु सीमित क्षेत्र में गीली धरती पर धान के बीज छिटकर खेती की जाती थी| वनों की अधिकता एवं नदियों का संगम होने के कारण जंगली जानवर एवं मछलियों की बहुतायत थी, अतः लोग मुख्यता मांसाहार पर निर्भर थे| जानवरों के शिकार में प्रयुक्त होने वाले हथियार जैसे- बाणाग्र, भाले की नोक, गुलेल में प्रयुक्त होने वाले मिट्टी की गोलियां आदि बहुत से प्राप्त हुए हैं|

चिरांद की नवाश्म संस्कृति से हड्डी एवं पत्थरों से निर्मित हथियार बहुतायत से मिले हैं| कुछ छुद्राश्म औजार के नमूने भी प्राप्त हुए हैं किंतु अस्थि निर्मित औजारों की बहुलता से प्रतीत होता है कि जानवरों की हड्डियों से औजार बनाने का यहां पूर्ण विकसित उधोग था| यहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर पता चलता है की मकान एक दुसरे के समीप बनाये जाते थे| इनका आकर गोल होता था| ये लगभग 2 मीटर व्यास के होते थे| बांस का आधार बनाकर दीवारे बनाई जाती थी, जिन्हें अन्दर और बाहर से गीली मिट्टी द्वारा ढक दिया जाता था| फर्श को लीप कर चिकना किया जाता था| इनके ऊपर नुकीली छत बनाई जाती थी, जो नरकुल और घास-फूस की सहायता से निर्मित होती थी| चिरांद के गाँव में आज भी इस प्रकार के घर या झोपड़ियाँ देखि जा सकती है| चिरांद के उत्खनित क्षेत्र में एक स्थान पर अनेक चूल्हे मिले है|

चिरांद के निवासी मूलरूप से आखेटक होने के साथ-साथ कृषक भी थे| उत्खनन से प्राप्त जौ, धान के जले दाने, भूसा, गेहूं, मूंग आदि के प्रमाण मिले है| जिससे पता चलता है की यहाँ के लोग खेती करना भी जानते थे| कृषि के अतिरिक्त पशुपालन के भी कुछ प्रमाण मिले है| संभवतः गाय, बैल एवं भैस पाली जाती थी| यहाँ के निवासी हाथी, बारहसिंघा, हिरण तथा गैंडे से परिचित थे| बारहसिंघे के सिंग तथा पशुओं की हड्डीयों से बने औजार बहुत लोकप्रिय थे| यहाँ मुख्य रूप से चार प्रकार के मृदभांडो का प्रयोग दिखाई देता है, जो- लाल मृदभांड, हल्के तथा गाढे धूसर मृदभांड, काले मृदभांड तथा काले-लाल मृदभांड हैं| इन मृदभांडो पर विभिन्न प्रकार की आकृतियों द्वारा अलंकृत किया जाता था|

चिरांद से लगभग नौ रेडियो कार्बन तिथियाँ प्राप्त हुई है| इनके आधार पर इस स्थल का काल 1800 ई०पू० से 1200 ई०पू० के मध्य रखा जाता है|

इस तरह से हम देखते है कि चिरांद भारत का कितना महत्वपूर्ण नवाश्म काल से सम्बंधित पुरास्थल है| यहाँ के उत्खनन से कई सांस्कृतिक काल प्रकाश में आए तथा हरेक सांस्कृतिक काल की अपनी एक विशेषता थी| नवपाषाणिक स्थलों में अस्थि और श्रृंग निर्मित सर्वाधिक उपकरण चिरांद से ही प्राप्त हुए है|